स्वयं से संवाद

जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के आलोक में जीवन का अन्वेषण

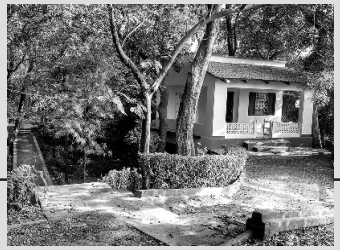

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया

वर्षा ऋतु, अगस्त 2019

क्या ये शिक्षाएं सिर्फ थोड़े-से लोगों के लिए हैं?

कृष्णमूर्ति : प्रश्नकर्ता पूछ रहे हैं : क्या 'के' की शिक्षाएं सिर्फ थोड़े-से लोगों के लिए हैं? आप क्या सोचते हैं? अगर ये बस कुछ के लिए ही हैं, तो इनका कोई मोल नहीं। इस वक्ता का कहना है कि ये सबके लिए हैं। लेकिन सब कोई तो गंभीर नहीं हुआ करते, उनमें ऊर्जा ही नहीं होती क्योंकि वे इसे विविध प्रकारों से बिखेरते रहते हैं, तो क्रमशः बहुत थोड़े जन ही रह जाते हैं। और यह देखने पर, आप कह देते हैं कि ये शिक्षाएं तो बस कुछ के लिए ही हैं। जब कि यदि आप वस्तुतः इनको प्रयोग में लाते हैं, अन्वेषण के जज़्बे, और एक भिन्न प्रकार का जीवन जी पाने की चाह के साथ, इन शिक्षाओं में गहरे पैठते हैं, तो ये सबके लिए हैं। कुछ भी गुह्य, रहस्यमय नहीं है इनको लेकर।

एक अद्‌भुत परिघटना का 125वाँ वर्ष

और यदि आप विचार की सीमाओं के परे जाएं, तो एक विराट रहस्य विद्यमान है। पर हम इनमें से कुछ भी नहीं करते : न हम इन शिक्षाओं को आज़माते हैं, न इन्हें हम अमल में लाते हैं; हम उस भोजन को ग्रहण ही नहीं करते जिसे हमारे समक्ष रखा गया है। और वे थोड़े-से, जो इसे ग्रहण करते हैं, वे कहते हैं, ''हम विशिष्ट जन, 'एलीट' है''। वे वास्तव में विशिष्ट वर्ग नहीं हैं – वे तो बसऐसे संजीदा लोग हैं जो इन शिक्षाओं को प्रयोग में लाये, इनके विषय में मनन किया उन्होंने, इनमें पैठे, यह देखते हुए कि ये शिक्षाएं उनके दैनिक जीवन पर असर डालती हैं।

प्रश्नोत्तर बैठक, ब्रॉकवुड पार्क,

30 अगस्त, 1979

पृष्ठ 3 से जारी...

हमारे जीवन और कर्म का मार्ग प्रशस्त हो

''संस्कृत भाषा में एक लंबा शांति-पाठ है, जिसे सदियों पहले किसी ने लिखा था, किसी ऐसे व्यक्ति ने जिसके लिए शांति परम आवश्यक रही होगी और शायद उसके दैनिक जीवन की जड़ें भी उसी में समाहित होंगी। यह प्रार्थना राष्ट्रवाद के दबे पाँव फैलते विष, पैसों के ज़ोर-ज़बर की अनैतिकता, और उद्योगवाद, 'इंडस्ट्रियलिज़म' से जन्मे संसारिकता के आग्रह से बहुत पहले लिखी गयी थी। यह प्रार्थना चिरस्थायी शांति के लिए है : सभी देवताओं के मध्य शांति हो; स्वर्ग और नक्षत्रों के मध्य शांति हो; पृथ्वी पर, मनुष्यों और चौपायों के बीच शांति हो; हम किसी को चोट न पहुँचाएँ; हम सब एक दूसरे के प्रति उदारभाव रखें; हमें वह धी, वह प्रज्ञा प्राप्त हो जिससे हमारे जीवन और कर्म का मार्ग प्रशस्त हो; हमारी प्रार्थना में, हमारे होठों पर, और हमारे हृदयों में शांति विराजे।

इस शांति पाठ में वैयक्तिक इकाई का, 'मैं' का, कोई उल्लेख नहीं है; वह चीज़ तो बहुत बाद में आयी। इस प्रार्थना में तो मात्र हम, हमारी शांति, हमारी प्रज्ञा, हमारा ज्ञान, हमारी संबोधि, 'एनलाइटनमेंट' है। संस्कृत के इस मंत्रपाठ में अद्‌भुत प्रभाव ध्वनित होता है। एक मंदिर में, लगभग पचास पुरोहित संस्कृत में पाठ कर रहे थे और वहाँ की दीवारें तक स्पंदित होती प्रतीत हो रही थीं।''

'कृष्णमूर्तीज़ जर्नल' से

अनुवाद : स्वरांगी साने

आगामी हिन्दी प्रकाशन

'दि अर्जेन्सी ऑव चेन्ज' का परिमार्जित हिन्दी अनुवाद 'आमूल क्रांति की चुनौती' राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा शीघ्र प्रकाश्य है। पुपुल जयकर द्वारा लिखित 'कृष्णमूर्ति : ए बायोग्राफी' का हिन्दी अनुवाद आगामी वर्ष में प्रकाशित होने जा रहा है। प्रो. पद्मनाभन कृष्णा द्वारा कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व एवं शिक्षाओं पर लिखी गयी पुस्तक 'जिड्डू कृष्णमूर्ति' शीघ्र ही दो भागों में पिलग्रिम्स द्वारा प्रकाशित होने वाली है। ये तीनों पुस्तकें प्रकाशन स्थलों के अतिरिक्त कृष्णमूर्ति सेन्टर, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट में बिक्री हेतु उपलब्ध रहेंगी। जिन्हें इनमें से कोई पुस्तकें खरीदनी हों तो हमें नाम और पता भेज सकते हैं।

हिंदी में उपलब्ध जे. कृष्णमूर्ति की कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

जीवन एक अन्वेषण
अंतर्दृष्टि का प्रश्न
ज्ञात से मुक्ति
प्रथम और अंतिम मुक्ति
अंतिम वार्ताएं
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य
स्कूलों के नाम पत्र
सुखी वही जो कुछ भी नहीं
ईश्वर क्या है?
आपको अपने जीवन में क्या करना है?
आज़ादी की खोज
प्रेम क्या है; अकेलापन क्या है?
सत्य और यथार्थ
मन क्या है?
ये रिश्ते क्या हैं?
ध्यान
जीवन और मृत्यु
शिक्षा क्या है?
सोच क्या है?

पुस्तकों को मंगवाने के लिए सम्पर्क करें :
कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001
ईमेल : studycentre@rajghatbesantschool.org

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वार्षिक गैदरिंग 2019

इस वर्ष की के एफ आइ वार्षिक गैदरिंग ऋषि वैली एजुकेशन सेंटर (आंध्र प्रदेश) में 15 नवम्बर से 18 नवम्बर, 2019 तक आयोजित की जा रही है।
थीम है : Violence, Identity, and Transformation
(हिंसा, पहचान और रूपान्तरण)

फार्म भरने के लिए क्लिक करें :
https://www-rishivalley.org/2019gathering

कृष्णमूर्ति सेंटर, राजघाट, वाराणसी में आयोजित आगामी संवाद–रिट्रीट

9 अक्टूबर से 13 अक्टूबर, 2019
Can We Live Together without Conflict
(क्या हम बिना टकराव के संग-साथ रह सकते हैं?)

हिन्दी रिट्रीट
24 नवम्बर से 28 नवम्बर, 2019
संबंधों के आईने में हमारा जीवन
(Our Lives in the Mirror of Relationship)

इंटरनेशनल रिट्रीट
24 दिसम्बर से 30 दिसम्बर, 2019
You are the World
(आप ही यह संसार हैं)

विवरण के लिए संपर्क करें :
E-mail : studycentre@rajghatbesantschool-org
T : 91-6394751394

के. एफ़. आई. द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका
परिसंवाद (त्रैमासिक)

सदस्यता शुल्क :
एक वर्ष के लिए : रु. 150
पाँच वर्ष के लिए : रु. 600
दस वर्ष के लिए : रु. 1000

के. एफ़. आई. द्वारा प्रकाशित हिंदी न्यूज़लैटर
स्वयं से संवाद (वर्ष में दो अंक)

निःशुल्क

संपर्क सूत्र :
कृष्णमूर्ति सेंटर
के एफ़ आई, राजघाट, वाराणसी–221001 (उ.प्र.)
ई मेल : studycentre@rajghatbesantschool-org
फोन : 6394 751 394

''सुनने का आशय केवल यह नहीं कि आप जो कुछ सुन रहे हैं अपनी पुरानी आदत के ढर्रे पर उसकी व्याख्या करने लगें; और इसका अभिप्राय मात्र यह जान पाने की कवायद ही नहीं कि वक्ता क्या कह रहा है, बल्कि आपको अपने खुद के विचारों को ध्यानपूर्वक, पूरी 'अटेन्शन' के साथ सुनना होगा, आपके अपने भावों, अपनी प्रतिक्रियाओं को सुनना होगा उन्हें बदलने की, दबाने की कोशिश किए बिना, उन्हें बस केवल गौर से देखना होगा।''

'मन क्या है?' से

शिक्षाओं का भविष्य

'के' की शिक्षाएं सजीव हैं, जीती-जागतीं। और किताबें, माफ कीजिए, सजीव नहीं हुआ करतीं; चाहे कोई भी किताब हो। जब 'के' की मृत्यु हो जाएगी, तो इन शिक्षाओं का होने क्या जा रहा है? क्या ऐसे लोग हैं, यदि मैं यह शब्दावली इस्तेमाल कर सकूं, जिन्होंने उस निर्झरिणी, उस चश्मे से इसे पिया है, और वहाँ से वे उसे आगे ले जाएंगे? 'के' को महज़ उद्धृत करते हुए नहीं, बल्कि इन शिक्षाओं की रूह को, इनकी सच्चाई को, इनकी जीवन्तता को, इनकी ऊर्जा को आत्मसात् करके। ये किताबें अपनी जगह हैं, लेकिन ये तो आल्मारी में धरी रहती हैं। आप यदा-कदा उन पर नज़र डालते हैं, पढ़ लेते हैं उन्हें, और भूल जाया करते हैं। मैं ये महसूस करता हूँ कि हममें से कुछ तो ऐसे होने चाहिए - यदि मैं उस मुहावरे को दोहरा सकूं - जिन्होंने उस निर्झरिणी से उसका पान किया है, अतः जो स्वतः इसके सत्य को देख पाते हैं, और इसकी अभिव्यक्ति उनके जीवन में हुआ करती है। जहाँ तक मेरा सरोकार है मेरे ख्याल से यह प्रमुख मुद्दों में से एक है, क्योंकि पिछले बावन वर्षों से, इस व्यक्ति ने इन सब मसलों पर विस्तार से बात की है, और मैं पाता हूँ कि - उम्मीद है आप मुझे ये कहने के लिए क्षमा करेंगे - कि एक भी शख्स ऐसा नहीं है जिसने उस शै को खुद से देखा हो, और उसके साथ उसका जीना जारी हो। कृपया ये भी समझ रखें कि मैं इसको लेकर मायूस नहीं हूँ कि अब तक ऐसा कोई नहीं है; मैं किसीको खोज नहीं रहा हूँ कि वह इसे आगे जारी रखे, लेकिन मेरे ख्याल में हमें इस सब पर गौर तो करना चाहिए।

विविध जनों ने मुझे बहुत अक्सर कहा है कि जब 'के' का निधन हो जाएगा, तभी वास्तविक चीज़ खिल पाएगी, क्योंकि "बरगद के पेड़ के नीचे कुछ नहीं उगा करता।" आप इस कहावत से वाकिफ होंगे? तो मुझे ऐसा बताया गया है, और ये भी कि यह तो है ही भविष्य के लिए, वर्तमान के वास्ते नहीं है; कि सदियों बाद इसे समझा जाएगा, न कि अब। पर मेरा विचार है कि ये सब बहानों के अलहदा-अलहदा भेस हैं, और अपने आप में इनकी कोई वैधता नहीं है। तो हम क्या करने जा रहे हैं? इसे किस तरह से कायम रखा जाना है, पोषित किया जाना है, कैसे जारी रखना है इसे?

'द परफ्यूम ऑव द टीचिंग्ज़'

पृष्ठ 1

★ ★ ★

शिक्षक एवं शिक्षाएं

प्रश्न : थियोसोफिकल सोसाइटी ने आपके मसीहा और विश्व-शिक्षक होने की बात की; आपने...उस मसीहाई का परित्याग क्योंकर किया?

कृष्णमूर्ति : मैं कोई मसीहा हूँ या नहीं, इसका उत्तर साधारणीकृत ढंग से नहीं दिया जा सकता - मैंने कभी इसे नकारा नहीं है, और मुझे नहीं लगता कि इससे बहुत ज़्यादा फर्क पड़ने वाला है कि इस बारे में *मेरा* विचार क्या है। महत्त्व इस बात का है कि आप अपने लिए स्वयं यह पता लगाएं कि क्या मेरी शिक्षाएं वह सत्य है। लेबलों के आधार पर फैसला मत लें, किसी नाम विशेष को महत्ता न दें; और मैं विश्व-शिक्षक, मसीहा, या कुछ और हूँ कि नहीं, इसकी आपके लिए अर्थवत्ता न के बराबर है। और यदि नाम महत्त्वपूर्ण हो चुका है, तो आप सत्य से चूक जाएँगे। कोई दावा करेगा कि मैं मसीहा हूँ, और कोई अन्य कहेगा कि मैं मसीहा नहीं हूँ; पर आपका द्वन्द्व, आपकी उलझन और व्यथा इन दावों और प्रतिदावों से हल नहीं होने जा रहे। महत्त्वपूर्ण, बहुत महत्त्वपूर्ण है सत्य की खोज में ईमानदारी से तत्पर होना, इसलिए कि यह कलह-क्लेश और पीड़ा से मुक्ति प्रदान करता है। मेरी शिक्षाओं के सत्य को आपकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में खोजा जा सकता है, और सत्य कहीं दूर नहीं होता, बल्कि यह तो एकदम पास में हुआ करता है। बौद्धिक, बुद्धि तक सीमित मनुष्य इसका पता नहीं लगा पाएगा, क्योंकि वह अपने खुद के ज्ञान के जाल में फँसा हुआ है; और जो भक्तिभाव वाला मनुष्य है वह भी इसको खोज नहीं पाएगा क्योंकि वह अपनी खुद की छवि और भावना में जकड़ा है; जो ईमानदारी के साथ तत्पर है, वही इसे समझ पाएगा।

मद्रास, 7 दिसंबर 1947

★ ★ ★

"जिस क्षण आप किसी के अनुयायी बनते हैं, आप सत्य के अनुयायी नहीं रह जाते।"

'ट्रुथ इज ए पाथलैस लैंड' से

यह किसी कुएं पर पहुँचने सरीखा है

कृष्णमूर्ति : क्या आप मुझमें से सब कुछ खोद-उलीच सकते हैं? आप एक कुएं पर पहुँचते हैं, और आपको अपनी बाल्टी के आकार के हिसाब से पानी मिलता है; जो भी पात्र आप लेकर आते हैं, पानी की उतनी ही मात्रा आपको उपलब्ध होती है। आपने खूब सारा पुरातन साहित्य पढ़ा है, आपने साधना की है, आपने वह भी पढ़ा है जिसकी बात हम करते आये हैं। आपको पारंपरिक दृष्टिकोण भली-भांति ज्ञात है, और आपको पता है कि संसार में क्या-क्या घटित हो रहा है। अब, आपकी और मेरी मुलाकात होती है। जितना भी आपके लिए मुमकिन है मुझमें से खोद निकालिए। मुझसे हर चीज पर सवाल कीजिए, आरंभ से लेकर अंत तक। गहराई से सवाल उठाइए, मानने वाले की तरह और न मानने वाले की तरह, गुरु की तरह और अ-गुरु की तरह, शिष्य की तरह और अ-शिष्य की तरह। यह ज़बर्दस्त प्यास लिये किसी कुएं पर पहुँचने सरीखा है, सब कुछ पता लगा लेने की चाहत के साथ। उस ढंग से इसे कीजिए, जनाब। तब, मेरे विचार से, यह लाभकारी होगा... सारी खिड़कियां तोड़ डालिए, क्योंकि मैं महसूस करता हूँ कि प्रज्ञा तो निस्सीम है। इसकी कोई सीमाएं हैं ही नहीं, और चूंकि इसकी सरहदें नहीं हैं, यह पूरी तरह से निर्वैयक्तिक, 'इम्पर्सनल' है। तो आप परंपरा के अपने समस्त अनुभव, ज्ञान और समझ के साथ, और परंपरा की तोड़ के प्रारूप के साथ – इसकी भी परंपरा बन जाती है – जो आप जानते हैं और जो आपने अपने ध्यान-चिन्तन से, अपनी खुद की जिन्दगी से समझ ली है, उस सब के साथ आप मेरे पास आते हैं। तो चंद शब्दों से संतुष्ट मत हो जाइए। गहरे पैठिए।

स्वामी सुन्दरम् : मैं यह जानना चाहूंगा कि आप स्वयं इस तक कैसे पहुँचे?

कृष्णमूर्ति : आप जानना चाहते हैं कि यह व्यक्ति इस तक कैसे पहुँचा? मैं आपको बता नहीं पाऊंगा। ऐसा है कि ज़ाहिरा तौर पर, उसका किसी भी साधना-अभ्यास, अनुशासन, ईर्ष्या, डाह, महत्त्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्द्धा, और शक्ति, पद, प्रतिष्ठा, ख्याति की चाहना से गुज़रना हुआ ही नहीं। उसको इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए था। और इसलिए कुछ त्यागने का भी कभी कोई सवाल नहीं था। तो जब मैं कहता हूँ कि मुझे वाकई मालूम नहीं, तो मैं सोचता हूँ कि सच्चाई यही होनी चाहिए।

स्वामी सुन्दरम् : मैं यह नहीं पूछ रहा कि उनका इस तक आना कैसे हुआ, पर उनके व्याख्यानों में इतनी सुनिश्चितता, विवेकसिद्धि, त्रुटिरहित तर्कसरणी दृष्टिगत होती है। यह उनके हृदय में है।

कृष्णमूर्ति : जब आप कहते हैं कि यह सब

> ''आशीर्वाद होता है एक ऐसा मन जो मौन है, पर बेहद चौकन्ना है, सावधान है; यह धरती सरीखा होता है, असीम संभावनाओं से समृद्ध।''
>
> ***'हैप्पी इज़ द मैन हू इज़ नथिंग' से***

इसलिए आता है कि यह हृदय में है, तो मुझे ज्ञात नहीं कि इस बात को मैं कैसे रखूं। यह हृदय से, या मन से नहीं आता, यह तो बस आ जाता है। या आप इसे ऐसे कहेंगे, जनाब, कि इसका आगमन किसी भी व्यक्ति में हो जाएगा, जो वास्तव में स्वार्थरहित है? मेरे खयाल से यही सर्वाधिक तर्कयुक्त जवाब होगा।

ट्रेडीशन एंड रिवोल्यूशन, अध्याय 21

★ ★ ★

आपका जीना ही वह संदेश है

प्रश्नकर्ता : जब आप भौतिक रूप से हमारे साथ नहीं होंगे... तो हममें से वे लोग जो आपके संदेश को समझ रहे हैं, भले ही सिर्फ बौद्धिक तौर पर, क्या करें? क्या हम स्वयं पर ही काम करना जारी रखें और शेष संसार को बिसरा दें? या,

हम आपकी शिक्षाओं का, जैसी कि हम उन्हें देख-समझ पा रहे हैं, प्रसार करने की कोशिश करें?

कृष्णमूर्ति : जनाब, यह आपका संदेश है, मेरा नहीं। यह आपकी पुस्तक है, मेरी नहीं। जिस ढंग से आप जी रहे हैं वही संदेश है, यदि आप उस तरह से जी पा रहे हैं जिसके बारे में हम बात करते रहे हैं, समय के परे होकर, तब आपका जीवन जीना ही वह प्रकाश है; यह किसी और पर आश्रित नहीं है। अब यह तो जीवन का तथ्य है कि हम सभी की मृत्यु होने ही वाली है। यह एक अखंडनीय तथ्य है। और वह भविष्य अब है, मृत्यु अब है। आप समझ रहे हैं? तात्पर्य यह कि वह अंत होना अभी, इसी पल है, न कि दस वर्ष अथवा पचास वर्ष के अरसे के बाद। और यदि कोई उस प्रकार से जीता है, तो आपका जीना ही वह संदेश है। यह 'के' का संदेश नहीं है, यह आपका है। तब उस जीने में ही, जिस ढंग से आप जी रहे हैं उसीसे, आप प्रसार कर रहे होते हैं; उसका प्रसार नहीं जो किसी और ने कहा है। समझे आप? सौन्दर्य आपका है, किसी और का नहीं।

दूसरी प्रश्नोत्तर बैठक, ब्रॉकवुड पार्क,
30 अगस्त, 1984

★ ★ ★

वह 'अटेन्शन' एक प्रकाश की मानिन्द है

सातवाँ प्रश्न : मुझमें हिंसा की एक गहरी जड़ जमी हुई है. मैं जानता हूँ कि यह मेरी अन्य भावनाओं के पीछे मौजूद है मैं इससे कैसे पेश आऊँ?

कृष्णमूर्ति : हिंसा क्या है? लोगों पर गोलियां बरसा देना? वह हिंसा का एक हिस्सा हुआ। औरों को चोट पहुँचाना? वह भी हिंसा का एक हिस्सा है। युद्ध - अपनी क्रूरता और पाशविकता समेत - हिंसा का सारभूत है। विकराल हैं युद्ध में होते कृत्य। और क्रोध, घृणा, अनुकरण हिंसा है, किसी के अनुरूप ढल जाना हिंसा है। पता नहीं आप यह समझ पा रहे हैं या नहीं? और क्या व्यक्ति, अपने आप में, इस सब को लेकर जागरूक है? कि वह सारा समय किसी ढाँचे के अनुरूप ढल रहा है; किसी आदर्श, किसी धारणा के अनुरूप, नकल करता हुआ, किसी अन्य के साथ अपनी तुलना करता हुआ, आक्रामक। तो क्या इस सब के हिंसा होने की जागरूकता है? या यह सिर्फ किसी को बन्दूक से मार डालने तक महदूद है? आप समझ रहे हैं? क्या यह हिंसा नहीं है अगर आपका किसी शै में बड़ी शिद्दत से विश्वास है? और किसी अन्य का उतनी ही शिद्दत से किसी और धारणा में विश्वास है, और आप उस अन्य का मत-परिवर्तन करने के यत्न में रत हैं, और वह आपके मत- परिवर्तन के यत्न में लगा है : द्वन्द्व, टकराव। क्या वह हिंसा नहीं है? क्या यह ज़ोर-शोर से किया जाने वाला प्रचार- प्रसार, धर्म के नाम पर, हर चीज़ के नाम पर, क्या यह हिंसा नहीं है? आप देख रहे हैं : आप हिंसा को बहुत ही छोटे घेरे में सीमित कर देते हैं।

तो, कोई करे क्या, प्रश्नकर्ता यही पूछ रहा है। तो, पहली बात तो यह, अगर मैं इंगित कर सकूं तो, हिंसा का विपरीत न रचें, जो कि अहिंसा है। ठीक? समझ पा रहे हैं आप? क्या आपको इस बात की व्याख्या चाहिए? यानी कि, मैं हिंसक हूँ, और मुझे प्रशिक्षित किया गया है, यह बोलना मेरी आदत का हिस्सा बन गया है कि 'मुझे हिंसक नहीं होना चाहिए'। समझ रहे हैं? मैं हिंसक हूँ, और मैंने अहिंसक होने का एक आदर्श रच लिया है, तो मुझमें एक द्वन्द्व होता है। देख रहे हैं? हिंसक होना, और हिंसक न होने की चाहत : यह द्वन्द्व ही तो है। सही है? और वह द्वन्द्व ही हिंसा है। आप देख पा रहे हैं इसे? क्या हम संवाद में हैं?

तो पहली खबरदारी यह लेनी है कि हम विपरीत की रचना न करें। ठीक? तब मेरा सामना उस तथ्य से होगा, न कि उसके

विपरीत से। उस विपरीत की जड़ें तो उसके अपने विपरीत में ही हैं। समझिए इसे! अतः, मेरा सामना अब हिंसा की वास्तविकता से है, न कि उस विचार से कि ''मुझे हिंसक नहीं होना चाहिए'', जो कि एक भ्रम है। तथ्य नहीं है वह; तथ्य तो है कि मैं हिंसक हूँ। आप देख रहे हैं कि तथ्यों से पेश न आने के लिए हमें किस तरह प्रशिक्षित किया जाता है? अस्तु, मुझे भान होता है कि मैं हिंसक हूँ और मुझमें अहिंसक बनने का जतन करने की कोई धारणा नहीं है। वो धारणा अब मेरे रक्त में ही नहीं रही, अतः अब मैं सिर्फ तथ्य से पेश आ रहा हूँ।

अब, मैं उस तथ्य को देखता किस तरह हूँ? एक निरीक्षक के तौर पर, जो निरीक्षित की जाने वाली वस्तु को देख रहा है? या, वह निरीक्षक स्वयं ही हिंसक है? बात आपको समझ आयी? मुझे थोड़ा शक है...क्या हम इसमें संग-साथ हैं? बताइए, सज्जनो, क्या हम साथ हैं? वो शख्स, वो हस्ती या वो खयाल जो ये कह रहा है : ''मैं हिंसक हूँ, और इसे बदलना होगा, या किसी और वृत्ति में रूपांतरित करना होगा'', और वह रूपान्तरकार, उस हिंसा का ही एक हिस्सा है। वह कोई अलहदा इकाई नहीं है, कोई उच्चतर सत्ता जो कि अहिंसक है, जो शांतिमयी है। समझ रहे हैं? वह तो विचार की एक और ईजाद भर है इस खाँटी सच्चाई से भागने के वास्ते, कि मैं हिंसक हूँ। इस पर थोड़ा ध्यान दें, हो सकता है आप थके हुए हों, पर इस पर बस थोड़ी-सी तवज्जो दें : देखने वाले, और जिसे देखा जा रहा है, इनके बीच कोई विभाजन नहीं हुआ करता। ठीक है? बस सिर्फ वह तथ्य होता है, सिर्फ उस तथ्य का देखा जाना होता है; यह नहीं कि ''मैं तथ्य को देख रहा हूँ''। ठीक? सिर्फ विशुद्ध अवलोकन है उस प्रतिक्रिया का जिसे अतीत में एक शब्द दिया गया है : 'हिंसा'।

तो मैं महसूस करता हूँ कि वह शब्द वह वस्तु नहीं है, बल्कि उस भावना की, उस प्रतिक्रिया की जो असल हलचल है, वही तथ्य है। और मैं, तथा वह प्रतिक्रिया, अलहदा शै नहीं हैं। बस सिर्फ वह प्रतिक्रिया है। इसमें दरकार होती है - समझ रहे हैं?- बहुत करीब से गौर करने की...

तब आप देखेंगे, जब आप उस बिंदु तक आ पाएं, यानी, जब आप उस तथ्य पर खूब-खूब ध्यान दे रहे हों, तो उस तथ्य पर दिया जा रहा अवधान, 'अटेन्शन' विद्यमान है। और वह 'अटेन्शन' एक प्रकाश की मानिन्द है जो किसी चीज़ पर पड़ रहा है; और उससे वो हिंसा विसर्जित हो जाती है, खत्म हो जाती है।

आप इसे ग्रहण कर पाये? नहीं, ***मुझसे*** ग्रहण करने वाली बात नहीं; बल्कि उस तथ्य को देख पाना, यह देख पाना कि हम किस कदर चालबाज़ हैं। इस कदर चालबाज़ी, बेईमानी बन जाया करती है, ये सारी चीज़।

तो, जब आप किसी बात को सुलझाने के लिए समय का इस्तेमाल होने देते हैं, तो वह बात बढ़ती जाती है, कई गुना होती जाती है। केवल वह मन जो स्पष्टता से देखता है, कृतकार्य होता है, 'एक्ट' कर पाता है।

चौथी प्रश्नोत्तर बैठक,
ओहाइ, 14 मई, 1981

अनुवाद : शक्ति कुमार

'क्राइसिस' हमेशा नयी होती है

कृष्णमूर्ति : ...तो वह बंदा कहता है, ''वैज्ञानिक, राजनेता, शिक्षक, धार्मिक लोग, ये उत्तरदायित्व इन सब का है, पर मुझे इस बारे में कुछ मालूम नहीं है, मैं तो बस अनुयायी हूँ।'' यही आम रवैया है पूरी दुनिया में।

एण्डरसन : जी हाँ, बिल्कुल।

कृष्णमूर्ति : मैं खुद को गैरज़िम्मेवार ठहरा लेता हूँ। आपको ज़िम्मेवारी सौंपकर मैं गैरज़िम्मेवार बन जाता हूँ। जब कि हमारा कहना है : आपके अलावा और कोई ज़िम्मेवार नहीं है। क्योंकि आप ही यह संसार हैं; और यह संसार है आप। आपने यह उलझन पैदा की है, आप ही इसे सुलझा सकते हैं, इसलिए आप कुल मिलाकर, पूरी तरह से, सर्वथा उत्तरदायी हैं, कोई और नहीं! अब, इसका अर्थ है कि आपको स्वयं को ही अपने लिए प्रकाश होना होगा - न कि किसी प्रोफेसर या मनोविश्लेषक या मनोवैज्ञानिक का प्रकाश, या जीसस अथवा बुद्ध का प्रकाश - आपको ही स्वयं के लिए उजाला होना होगा; एक ऐसे संसार में जो एकदम अंधकारमय होता जा रहा है। इसका अर्थ है आपको उत्तरदायी होना होगा। अब इस शब्द 'उत्तरदायी' का आशय क्या है? दरअसल इसका अर्थ है : पूरी तरह उत्तर देना, समुचित रूप से, हरएक चुनौती का। संभवतः समुचित जवाब आप नहीं दे पाएंगे यदि आपने अपनी जड़ें भूतकाल में जमा रखी हों। क्योंकि चुनौती तो नयी होती है, नहीं तो वह चुनौती ही नहीं है; संकट नया होता है, अन्यथा वह संकट नहीं है, 'क्राइसिस' नहीं है। इसलिए सर, जवाबदेही के मायने हैं किसी चुनौती को लेकर सम्पूर्ण प्रतिबद्धता, उस संकट का जवाब देना, सही ढंग से, पूरे तौर पर। अँग्रेजी के शब्द 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' का अर्थ भी यही है : 'रिस्पॉन्ड' करना, जवाब देना। मैं पूरी तरह से जवाब नहीं दे सकता अगर मैं डरा हुआ हूँ; मैं तब भी पूरी तरह जवाब नहीं दे पाता अगर मैं सुख की, मज़े की तलाश में हूँ। और, मैं पूर्णरूपेण उत्तर नहीं दे सकता यदि मेरा क्रियाकलाप किसी ढर्रे पर है, दोहराया जा

> ''जिस मन ने विचार की समस्त गतिविधि को समझ लिया है, वह असाधारण रूप से शांत, पूरी तरह से मौन हो जाता है।''
>
> ***'इम्पॉसिबल क्वेस्चन' से***

रहा है, परंपरागत है, संस्कारों में कैद है। तो संकट का समुचित रूप से प्रत्युत्तर अर्थात : 'मैं', जो कि अतीत है, उसका अंत।

★ ★ ★

कृष्णमूर्ति : सत्ता प्रामाण्य की, 'अथॉरिटी' की अहमियत क्या है? 'अथॉरिटी' शब्द का अर्थ है : वो, जो कुछ नया, मौलिक लेकर आए।

एण्डरसन : 'ऑथर', रचयिता।

कृष्णमूर्ति : रचयिता।

एण्डरसन : हाँ।

कृष्णमूर्ति : और ये पुरोहित, ये गुरु, ये नेता, आध्यात्मिक उपदेशक -- क्या नया लाये ये लोग? ये तो बस परंपरा को दोहरा रहे हैं, है कि नहीं?

एण्डरसन : जी हाँ, वही कर रहे हैं।

कृष्णमूर्ति : और, परंपरा, चाहे वह ज़ेन-बौद्ध परंपरा हो, या चीन की हो, या हिन्दू परंपरा हो, वह एक मृत वस्तु है! और ये लोग इस मरी हुई चीज को बनाए रख रहे हैं। 'अथॉरिटी' को मानने के पीछे क्या है? क्या यह भय है? आध्यात्मिक तौर पर कुछ गलत कर बैठने का भय, सही-सटीक नहीं करने का भय, संबोधि, प्रज्ञान उपलब्ध करने की दिशा में, परम चेतना, या जो भी उसे कहें...। तो क्या ऐसा भय है? या फिर हताशा का अहसास है, निपट अकेलेपन का अहसास, निपट अज्ञान का? मैं 'अज्ञान' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, उस शब्द के गहरे अर्थ में।

एण्डरसन : जी हाँ, मैं समझ रहा हूँ।

कृष्णमूर्ति : जो मुझसे कहलवाता है : ''ये एक शख्सियत है जिसका कहना है कि उसे ज्ञात है; मुझे यह मान्य होगा।'' यहां मैं विवेक का प्रयोग नहीं कर रहा - देख रहे हैं, सर?- मैं यह नहीं कहता : ''*क्या* जानते हैं आप?'' जब अज्ञान होता है, जब तर्क-विवेक काम नहीं कर रहा होता, हम मान लेते हैं, स्वीकार कर लेते हैं; जब बुद्धि कुंद हुई होती है। और आपको ज़रूरत है इस सब की : स्वतंत्रता, बुद्धि, तर्क-विवेक की -- असल आध्यात्मिक मामलों के संदर्भ में। अन्यथा, होता क्या है? कोई गुरु आता है और आपको बताता है कि क्या करना है, और जो वह कहता-करता है आप उसे दोहराते जाते हैं? समझ रहे हैं, सर, यह कितना विनाशकारी है, किस कदर गिरावट है यह? यही है जो हो रहा है! तो क्या हम - सर, इससे एक बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न उभरता है - क्या हम इस प्रकार शिक्षित कर सकते हैं, क्या ऐसी शिक्षा संभव है, जिसमें किसी तरह का सत्ता-प्रामाण्य, किसी तरह की कोई 'अथॉरिटी' हो ही नहीं?...

'ए होली डिफरेंट वे ऑव लिविंग' से

अनुवाद : अनिल बरवे

> ''ध्यान व्यक्तिगत नहीं हुआ करता, न ही यह सामाजिक होता है; यह दोनों का अतिक्रमण करता है, उनके पार जाता है, और इसलिए इसमें दोनो का समावेश है। यही तो प्रेम है : प्रेम का खिल उठना ही ध्यान है।''
>
> *'द ओन्ली रेवोल्यूशन' से*

कृष्णमूर्ति की दृष्टि उनके श्रोताओं को अवधान के 'अटेन्शन' के एक संयुक्त क्षेत्र में खींच ले आती थी। किन्तु कृष्णमूर्ति की दृष्टि में उनके सामने कोई समूह नहीं बैठा होता था। कृष्णमूर्ति से आविर्भूत होना सीधा संप्रेषण वहाँ उपस्थित हरएक महिला और पुरुष के साथ उनका संपर्क स्थापित कर देता था; हर व्यक्ति को यह महसूस होता था कि कृष्णमूर्ति केवल उसी से बात कर रहें हैं।

पुपुल जयकर कृत 'कृष्णमूर्ति : ए बायोग्राफी' से

जो वे बोल रहे थे, वही वे जी भी रहे थे

जिस शख्स के बारे में लिखा जा रहा हो, अगर वही इस बात को साफ-साफ नकार दे कि उसकी युवावस्था का उसके बाद के जीवन के संदर्भ में कोई महत्त्व है, तो फिर उस जीवनी की शुरूआत ठीक-ठीक कहाँ से हो? औपनिवेशिक भारत में एक परंपरागत संयुक्त ब्राह्मण परिवार की सुरक्षाप्रद बाँहों में (1895–1908) उनका लालन-पालन हुआ, और फिर वे तेरह साल की उम्र से (1909–1929) इंटरनेशनल थियोसोफिकल सोसाइटी में, एडवार्डियन इंग्लैंड (1911–1920) के विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों के बीच रहे, उनका जीवन बीसवीं सदी के (1900–1986) 86 प्रतिशत हिस्से में फैला रहा; युवा 'के' ने कहा कि जवानी के उनके दिनों में, जब तक कि वह पच्चीस साल के नहीं हो गए, जो भी हालात रहे हों उन्होंने उन पर कोई खास असर नहीं डाला, क्योंकि वह कहाँ रहे और उनका पालन-पोषण कैसे हुआ और उस्ताद लोगों ने उनको क्या पढ़ाया-लिखाया, मानसिक रूप से इस सब का उन पर कोई असर नहीं पड़ा, इसके कोई संस्कार उनके मन पर नहीं पड़ सके। यह साहसिक दावा उनके जीवन काल में ही सिद्ध हो गया था। चूंकि उनके जीवन और उनकी शिक्षाओं के इतने समृद्ध और गहरे आयाम हैं कि उसके लिए कई खंडों का विस्तार चाहिए, लेकिन मैंने जानते-बूझते इस संक्षिप्त जीवनी को विश्लेषण और अतिरिक्त विस्तार से मुक्त रखा है। जिस खोज की शुरूआत पाठक के भीतर यह पुस्तक करती है, उम्मीद की जाती है कि उसे आगे बढ़ाने के लिए वह सीधे 'के' की शिक्षाओं से जुड़ेगा।

हालांकि 'के' का जन्म भारत में हुआ, उन्होंने कहा कि वे एक भारतीय अथवा एक हिन्दू नहीं हैं। उन्होंने राष्ट्रीयता के सभी लेबलों को उतार फेंका, और कभी किसी खास देश, धर्म या समुदाय से अपनी पहचान नहीं जोड़ी।

किसी आदमी के जीवन की कहानी कहते हुए, खास तौर पर उसकी जो बहुत जाना-माना और मशहूर रहा हो, अक्सर यह बात उभर कर आती है कि उसमें सार्वजनिक और निजी दोनों आयाम ऐसे भी हुआ करते हैं जो हमेशा एकरूप नहीं होते, और कई बार तो एक-दूसरे से उलट भी होते हैं। 'के' कहते थे कि वह बहुत निजताप्रवण, संकोची स्वभाव के व्यक्ति थे, लेकिन फिर भी विश्व-शिक्षक की उनकी सार्वजनिक भूमिका और उनके रोज़ाना के जीवन में कोई अलगाव या बँटवारा नहीं था। जो वे बोल रहे थे, वही वे जी भी रहे थे; दुनिया भर में हज़ारों लोग जो उनके साथ जिये, जिन्होंने उनके साथ काम किया, या उनकी वार्ताओं में सहभागी हुए, इस बात की गवाही दे सकते हैं।

अपनी किशोरावस्था के वर्षों से लेकर अपने जीवन के अंत तक वे एक विरल-विशिष्ट संसार में रहे जहाँ वे पूर्ण, न कि सापेक्ष, सत्य को ग्रहण करते रहे और इसे ही औरों से साझा करते रहे। यह सत्य कोई *उनका* नहीं था। यह किसी लौकिक या धार्मिक सत्ता, 'अथॉरिटी' द्वारा प्रदत्त नहीं था, न ही यह पुरातन अथवा आधुनिक था। तहकीकात की प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए, श्रोताओं के संग-साथ, उन्होंने सत्य को, मनुष्य की सोच और उसकी ज़िंदगी की हकीकत को उजागर किया। वे जीने के मनोविज्ञान में इस तरह से जाँच-पड़ताल करते रहे, जिससे कि जनसामान्य, जो आम जीवन जी रहे हैं, बदल सकें और प्रज्ञापूर्वक शांतिमय जीवन जी सकें, बिना किसी द्वंद्व के।

मार्क ली द्वारा सद्यःलिखित
कृष्णजी की जीवनी से

अनुवाद : बलराम, राजेश कठपालिया

''अगर आप स्वयं को समझना शुरू करते हैं, भले ही आप उम्र में छोटे हों या बड़े, तो आप कभी न खत्म होने वाले, भरपूर खजाने खोज निकालेंगे। किंतु इस अन्वेषण, इस खोज के लिए ज़रूरत होती है अनथक सजगता की, सामंजस्य की, प्रयोगधर्मिता की, प्रत्येक विचार-भाव, सोच-अहसास के प्रति जागे हुए होने की...''

ओहाय वार्ता, 4 जून, 1944

'स्वयं से संवाद'
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001
ईमेल : studycentre@rajghatbesantschool.org

संपादक : मुकेश गुप्ता
सलाहकार : शक्ति कुमार

छायाचित्र अरविन्द शुक्ल के सौजन्य से

'कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. पी. कृष्णा द्वारा सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, एस–1/208 के–1 नयी बस्ती, पांडेयपुर, वाराणसी 221 002 से मुद्रित एवं कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 (उ. प्र.) से प्रकाशित। संपादक : मुकेश